ब्र. हेमचन्दजी 'विद्वत्रत्न' से विभूषित

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक 26 मई को अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद दिल्ली द्वारा **ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल** को जैनधर्म के प्रचार-प्रसार की अनवरत सेवाओं के उपलक्ष्य में पण्डित प्रकाशचंद हितैषी पुरस्कार से सम्मानितकर **विद्वत् रत्न** की उपाधि से विभूषित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता विद्वत्परिषद के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर डॉ.राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई ने ब्र.हेमचंदजी का विस्तृत परिचय दिया एवं कहा कि इंजीनियर होते हुये भी आपने मोक्षमार्गप्रकाशक एवं अन्य अनेक ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद और सम्पादन करके जैन आंग्ल साहित्य में वृद्धि की तथा प्रवचन, लेखन द्वारा निरंतर नि:स्वार्थ एवं निष्पक्षभाव से धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

समारोह में ब्र.यशपालजी ने तिलक लगाकर, डॉ.हुकमचंदजी संगवे सोलापुर ने माल्यार्पण करके, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा ने शॉल ओढाकर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने 5 हजार रुपये की राशि भेंटकर एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर ब्र. हेमचंदजी हेम का सम्मान किया तथा उनकी धर्म सेवाओं का उल्लेख किया।

प्रशस्ति-पत्र का वाचन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

ब्र. हेमचंदजी हेम ने पुरस्कार को साभार स्वीकार करके पुरस्कार राशि वीतराग-विज्ञान (कन्नड़) के एक माह के अंक हेतु समर्पित की। उद्बोधन में अपने रोचक अनुभवों से अवगत कराते हुये धर्म के प्रचार-प्रसार, साहित्य एवं साधना की भावना व्यक्त की।

समारोह का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. राजेन्द्रजी बंसल ने किया।

टोडरमल स्मारक भवन स्थित

नवीनीकृत बाबूभाई सभागृह का उद्घाटन

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित बाबूभाई मेहता स्मृति सभागृह के नवीनीकरण का कार्य विगत 3 माह से चल रहा था, जो पूरा हो चुका है। इस सुन्दर सभागृह का उद्घाटन समारोह शनिवार, दिनाँक 31 जुलाई 2010 को आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर ने की; हॉल का उद्घाटन श्री चन्द्रकांतभाई मेहता एवं दिलीपभाई शाह परिवार जयपुर ने किया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। उद्घाटन के पूर्व श्री शांतिविधान का आयोजन भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया एवं मंगलाचरण अंकित जैन छिंदवाड़ा एवं अशोक जैन बकस्वाहा ने किया।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 326 अंक : 2

अब हम आतम...

अब हम आतम को पहचान्यो।। टेक।।
जबही सेती मोह सुभट बल, छिनक एक में मान्यो।।
।। अब हम आतम... ।।1 ।।
राग विरोध विभाव भजे झर, ममता भव पलान्यो।
दर्शन - ज्ञान - चरनमय चेतन, भेद रहित परवान्यो।।
।। अब हम आतम... ।।2 ।।
जिहि देख्यो हम अवर न देख्यो, देख्यो सो सरधान्यो।
ताको कहो, कहें कैसे करि, जा जानें जिमि जान्यो।।
।। अब हम आतम... ।।3 ।।
पूरव भाव स्वपनवत देखे, अपनो अनुभव तान्यो।
'द्यानत' ता अनुभव स्वादतही, जनम सफलकरि मान्यो।।
।। अब हम आतम... ।।4 ।।

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

छहढाला प्रवचन

हे जीव! मिथ्यात्वादि को छोड़कर अब आतम के हितपंथ लाग

ते सब मिथ्या चारित्र त्याग, अब आतम के हितपंथ लाग।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग, अब दौलत निजआतम सुपाग ।।१५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जगत् के बहुत जीव तो भगवान के कहे हुए वीतराग-विज्ञान को पहचानते ही नहीं और मूढ़तापूर्वक ऐसा समझते हैं कि हम तत्त्वज्ञान को जानते हैं; वे जीव कुगुरुओं के निमित्त से विपरीत विचार में ही अपनी ज्ञानशक्ति को गवाँकर मिथ्यात्व की पुष्टि करते हैं; ऐसे जीवों को तो सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति का अवकाश ही नहीं है।

अब कोई जीव कदाचित् थोड़ी सी विवेकबुद्धि प्रगट करे और कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का सेवन छोड़कर सच्चे देव-गुरु-धर्म के पास आवे तो वहाँ भी वे देव-गुरु शुद्धात्मा के अनुभव के निश्चय उपदेश को तो अंगीकार नहीं करता और मात्र व्यवहारश्रद्धा करके, परमार्थ से अतत्त्वश्रद्धानी ही बना रहता है; यद्यपि उसको मिथ्यात्वादि की मंदता की अपेक्षा दुःख भी मन्द है, तथापि सम्यग्दर्शन से अत्यधिक आनंद का अनुभव हुए बिना दुःख का कभी अभाव नहीं होता; मंद-तीव्र हुआ करता है; परन्तु अभाव नहीं होता; अतः सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के सिवाय अन्य जो कोई उपाय जीव करता है, वे सब झूठे हैं। तो सच्चा उपाय क्या है ? सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र अर्थात् वीतराग-विज्ञान ही सच्चा उपाय है।

जीव को प्रत्यक्षरूप से वेदन होने वाले अनेक दुःख उसको न भासे तो दूसरा उसको कैसे दिखायेगा ? अपना परिणाम देखने का धैर्य और विशुद्धता होनी चाहिए। भाई ! तुम धीर होकर अपने अन्तर में विचार करो कि शास्त्र में जैसा दुःख का वर्णन किया है, वैसा दुःख तुम्हारे में है कि नहीं ? तुम अपने दुःखों और दुःख के कारणों को जानो और उनसे छूटने के लिये इस मनुष्य जीवन को धर्म साधन में लगाओ, तभी तुम्हें मोक्ष सुख होगा। मोक्षसुख की साधना मनुष्यपने में ही हो सकती है। तुम

मोक्षसाधन न करके यदि विषय-कषायों में ही मनुष्यजन्म खो दोगे, तो पछताओगे।

श्रीगुरु महाराज करुणा से बारबार समझाते हैं; परन्तु जीव सम्यक् परिणमन नहीं करता, अपने हित के लिये अन्तर में गहरा विचार भी नहीं करता। अरे भाई ! निजहित कैसे हो - उसका तुम विचार तो करो ! मोक्षमार्ग प्रकाशक में पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि भली होनहार होने पर जीव को ऐसा विचार आता है कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आकर मैंने यहाँ जन्म धारण किया है ? देह छोड़कर मैं कहाँ जाऊँगा ? मेरा स्वरूप क्या है ? यह चरित्र कैसा बन रहा है ? मुझे जो यह भाव होते हैं, उनका क्या फल आयेगा ? तथा इस जीव को जो दुःख हो रहा है, उसको दूर करने का उपाय क्या है ? इतनी बातों का निर्णय करके जैसे अपना हित हो वैसे ही करना। ऐसे विचारपूर्वक वह जीव उद्यमवंत होता है; अति प्रीतिपूर्वक श्रवण करके श्रीगुरु के कहे हुए वस्तुस्वरूप का अपने अन्तर में बारम्बार विचार करता है, सत्यस्वरूप का निश्चय करके उसमें उद्यमी होता है। इसप्रकार आत्महित करने का अति उत्साहित जीव वीतरागविज्ञान प्रगट करके अपना कल्याण साधता है।

जिज्ञासु जीवों के कल्याण के लिये वीतराग-विज्ञान का यह उपदेश है। इसमें दुःख के कारणरूप मिथ्यात्वादि का स्वरूप दिखाकर उसका निषेध किया है; उसमें ऐसा प्रयोजन है कि मिथ्यात्व के प्रकारों को पहिचानकर अपने में ऐसा कोई दोष हो तो उसे दूर कर सम्यक्श्रद्धा प्रगट करना; परन्तु किसी और में ऐसे दोष देखकर कषाय नहीं करना; क्योंकि जीव का अपना भला-बुरा अपने ही परिणामों से होता है। अपने हित के लिये सर्व प्रकार के मिथ्याभाव छोड़कर सम्यग्दृष्टि होना योग्य है। मिथ्यात्व संसार का मूल कारण है; राग-द्वेष शुभाशुभपरिणाम भी दुःख हैं, संसार का कारण हैं। ऐसे मिथ्यात्व और राग-द्वेष को दुःखरूप जानकर हे जीवों ! अब तो उनका सेवन छोड़ो... और आत्मा का सच्चा श्रद्धा-ज्ञान करके उसमें लीनता का उद्यम करो।

चैतन्य दौलतवाले हे दौलतराम ! हे आतमराम ! अपने अनन्तगुणनिधान की दौलत को तुम सम्हालो। सोने-चाँदी की दौलत तो जड़ है, तुमसे जुदी है; तुम्हारा आत्मा केवलज्ञानादि अनन्त गुणरूप दौलत से भरा है; उसको पहिचानकर तुम्हारे निज-निधान को संभालो। - इसप्रकार ग्रंथकार कवि दौलतरामजी अपने आपको भी संबोधन करते हैं और दूसरों को भी ऐसा उपदेश देते हैं। हे भाई ! तुममें तो केवलज्ञान और सिद्धपद होने की ताकत है, परन्तु अपने को भूलकर तुम भव में भटके। अतः अब दूसरी सब चिन्ता छोड़कर, जगत् का जाल तोड़कर तुम आत्महित के उद्यम में लागो... रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग को प्रगट करो। उस मोक्षमार्ग का वर्णन अब तीसरी ढाल में करेंगे।

अहो, वीतरागी सन्त करुणापूर्वक कहते हैं कि हे भाई ! अब तुम आत्मा के हितपंथ में लग जाओ (अब आतम के हितपंथ लाग); तुम्हारा बहुत काल दुःख में चला गया, अब तो सावधान होकर आत्मा का हित करो। हित करने का यह अवसर है। ऐसा उत्तम अवसर मत चूकना। राग दुःखदायक होने पर भी उसको सुखदायक मान लिया और सम्यग्दर्शनपूर्वक वीतरागी चारित्रधर्म आनन्ददायक होने पर भी उसको दुःखदायक माना, इसप्रकार बंध-मोक्ष के कारण में भूल की और विपरीत तत्त्वश्रद्धा की; तत्त्व की ऐसी भूलरूप मिथ्यात्व को छोड़कर, यथार्थ तत्त्व पहचानकर सम्यग्दर्शन प्रगट करके अन्तर में मोक्षमार्ग में लग जाओ। हे आत्मन्! ऐसे अपने हित के लिये तुम शीघ्र सावधान हो जाओ।

सच्चे जैनवीतरागमार्ग के सिवाय किसी भी दूसरे मार्ग को मानना सो तो गृहीत-मिथ्यात्व है, उसमें तीव्र विपरीतता है; और जैनसंप्रदाय में आ करके भी यदि अपने अंतर में सर्वज्ञदेव कथित नवतत्त्व का सच्चा निर्णय व आत्मअनुभव न किया तो अनादि का मिथ्यात्व छूटता नहीं; इसलिए छहढाला के इस अधिकार में तत्त्वश्रद्धान में जीव की भूल दिखाकर उसके त्याग का उपदेश दिया है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान चारित्र आनन्ददायक है और मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र दुःखदायक है, इन दोनों को अच्छी तरह पहचानकर सम्यग्दर्शन-ज्ञान चारित्र का ग्रहण करो और मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का त्याग करो। अरे! अरिहन्तदेव के जैनमार्ग में आकर के भी यदि तुमने तत्त्व का सच्चा निर्णय करके आत्म-अनुभव न किया तो तुम्हारा कल्याण कैसे होगा?

ज्ञानी करुणा से उपदेश करते हैं कि हे वत्स ! हे भव्य ! यहाँ संसारदशा में जो दुःख दिखाया तथा उसके कारणरूप मिथ्यात्वादि भाव दिखाया, उसका अनुभव तुमको होता है या नहीं ? तुम जो उपाय अबतक करते थे उसको झूठा कहा ह्न वह भी ऐसा ही है कि नहीं ? तथा सम्यग्दर्शनादि से सिद्ध अवस्था प्रगट होने पर परम सुख होता है यह बात ठीक है कि नहीं ? इन सबका तुम स्वयं विचार करो और यदि ऊपर कहे अनुसार ही तुमको प्रतीति उपजे तो संसार से छूटकर सिद्धपद का सुख पाने का हम जो उपाय कहते हैं उसको तुम अंगीकार करो ! विलम्ब न करो। ऐसा उपाय करने से तुम्हारा कल्याण ही होगा।

इसप्रकार पं. श्री दौलतरामजी रचित छहढाला में, दुःख के कारणरूप मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का वर्णन करके उसको छोड़ने का उपदेश देनेवाले दूसरे अध्याय पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन पूर्ण हुए। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

जीव के विभावस्वभाव नहीं है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 39 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खलु सहावठाणा णो माणवमाणभावठाणा वा।
णो हरिसभावठाणा णो जीवस्साहरिस्सठाणा वा।।३९।।

(हरिगीत)

अरे विभाव स्वभाव हर्षाहर्ष मानपमान के।
स्थान आतम में नहीं ये वचन हैं भगवान के।।३९।।

जीव को वास्तव में स्वभावस्थान (विभावस्वभाव स्थान) नहीं हैं, मानापमान भाव के स्थान नहीं हैं, हर्षभाव के स्थान नहीं हैं या अहर्ष के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

धर्मीजीव को शुद्धस्वभाव की रुचि होने से मिथ्यादृष्टि अधर्म का त्याग वर्तता है।

यहाँ पर्यायबुद्धि छुड़ाकर स्वभावबुद्धि कराना है। बाहर के पदार्थ तो जैसे हैं वैसे ही हैं, उन्हें कुछ फेरना नहीं है। रुचि किस ओर झुककर कार्य करती है उसी पर धर्म-अधर्म का आधार है। रुचि पर की ओर अथवा राग की ओर होना अधर्म का कारण है। उस तरफ की रुचि पलटे कि ''मैं निमित्त का, संयोग का अथवा पर का कुछ भी करने में समर्थ नहीं हूँ, एकसमय का हर्ष का परिणाम मेरे त्रिकालीस्वभाव में नहीं है, मैं तो ज्ञानस्वभावी शुद्धजीव हूँ'' - इसप्रकार धर्मीजीव को शुद्धस्वभाव का आदर वर्तता है; इसलिए उसको मिथ्यात्व और पुण्य-पाप के अधर्म का त्याग वर्तता है।

शुद्धजीव को जाननेवाला जीव ही परपदार्थ तथा नवतत्त्वों को यथार्थ जानता है, अज्ञानी तो पर को भी यथार्थ नहीं जानता।

अज्ञानी जीव कहता है कि ''मैं इन परपदार्थों को तथा हर्ष के परिणामादि को जानता हूँ; किन्तु आत्मा को नहीं जानता'' तो वह पर को भी यथार्थ नहीं जानता।

स्वयं को जाने बिना पर को तथा अपने परिणाम को यथार्थ नहीं जान सकता। स्वयं जाननेवाला है ऐसा निर्णय किये बिना ''मैं दयापालक हूँ, शुभभाव का कर्त्ता हूँ'' ऐसे परिणाम का ज्ञान भी खोटा है। परपदार्थ पर में हैं, हर्ष-शोक के परिणाम पर्याय में हैं, तथापि वे मेरा स्वरूप नहीं हैं; उसीप्रकार पर के कारण अथवा हर्ष के कारण मेरा ज्ञान नहीं है, मेरा ज्ञानस्वभाव ही स्वपरप्रकाशक स्वतंत्र है। दया-दानादि अथवा हर्ष-शोक जितना मैं नहीं हूँ, मैं तो ज्ञाता-दृष्टा हूँ; इसप्रकार स्वभाव का निर्णय करके स्व की ओर ढलने पर जो सम्यग्ज्ञान प्रकट होता है, उसमें स्व को जानते हुए पर भी जानने में आ जाता है। पर्याय में जो हर्ष-शोक के परिणाम होते हैं, उन्हें भी जान लेता है। इसप्रकार धर्मीजीव को शुद्धजीवतत्त्व का यथार्थ ज्ञान होने से शेष आठ तत्त्वों का भी यथार्थ परिज्ञान हो जाता है।

अनेक प्रकार से व्यवहार के कथन शास्त्र में आते हैं; परन्तु स्वआत्मा का श्रद्धान-ज्ञान करने पर समस्त व्यवहारधर्म का ज्ञान हो जाता है।

अज्ञानी जीव दलील करते हैं कि शास्त्र में अनेक प्रकार से व्यवहारधर्म का व्याख्यान आता है, ऐसी दशा में हम किस धर्म को स्वीकार करें? जहाँ ब्रह्मचर्य की बात आती है वहाँ ब्रह्मचर्य के समान अन्य धर्म नहीं ह्न ऐसा लिखते हैं। दया की जहाँ बात आती है तो दया ही धर्म है ह्न ऐसा कहते हैं। तप का प्रसंग आने पर उसी की विशेषता बताई जाती है और कहा जाता है कि तपश्चरण ही धर्म है ह्न अतः उपवास, उपधानादि करो। स्वाध्याय का कथन आने पर उसी को परमतप और विनय की चर्चा आने पर कहा जाता है कि विनय जैसा दूसरा कोई मार्ग नहीं ह्न अतः विनय करो। भक्ति, यात्रा आदि की बात आवे तो भक्ति, यात्रा ही करो, यही धर्म है। इसप्रकार अनेक प्रकार से धार्मिक अनुष्ठानों की कथनी में हम किसे अंगीकार करें? एक धर्म कहा जाय तो उसे करें भी।

इसप्रकार अज्ञानी जीव व्यवहार की कथनी को अनसमझे दलील करता है। उससे कहते हैं कि हे भाई! यह समस्त कथन व्यवहार के हैं और इनका अभिप्राय विविध प्रकार के शुभभावों का ज्ञान कराना है। शुभभाव से रहित शुद्धचैतन्यस्वभाव की श्रद्धा और ज्ञान कर। उसके खूँटे में अपनी पर्याय को बाँधेगा तो धर्म की दशा प्रकट होगी। यों तो शास्त्रों में शुभ-व्यवहारधर्म के अनेक प्रकार से कथन आते हैं, वे सब ज्ञान करने के लिए हैं; किन्तु शुभभाव या व्यवहार आदर करने के लिए नहीं है। आदरणीय तो मात्र एक शुद्धस्वभाव ही है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मा परोक्ष है तो जानने में कैसे आवे ?

उत्तर : आत्मा प्रत्यक्ष ही है। पर्याय अन्तर्मुख हो तो प्रत्यक्ष जानने में आता है। बहिर्मुख पर्यायवाले को आत्मा प्रत्यक्ष नहीं लगता- नहीं दिखता; परन्तु है वह प्रत्यक्ष ही; क्योंकि उसके सन्मुख ढलकर-झुककर देखे तो अवश्य जानने में आता है।

प्रश्न : नियमसारजी शास्त्र में ऐसा कहा है कि आत्मा निरन्तर सुलभ है। इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : नियमसार कलश 176 में कहा है कि आत्मा निरन्तर सुलभ है। आहाहा ! आत्मा निरन्तर वर्तमान सुलभ है। वर्तमान सुलभ है-इसका तात्पर्य यह कि आत्मा वर्तमान में ही है, उसका वर्तमान में आश्रय लें ? भूतकाल में था और भविष्य में रहेगा- ऐसा त्रिकाल लेने पर उसमें काल की अपेक्षा आती है। इसलिए वर्तमान में ही त्रिकाली पूर्णानन्दनाथ पड़ा है, उसका वर्तमान में ही आश्रय लेना योग्य है-ऐसा कहते हैं।

प्रश्न : स्वद्रव्य आदरणीय है, उसीप्रकार उसकी भावनारूप निर्मलपर्याय को भी आदरणीय कहें ?

उत्तर : हाँ, राग हेय है, उसकी अपेक्षा से निर्मल पर्याय को आदरणीय कहा जाता है। द्रव्य की अपेक्षा से पर्याय व्यवहार है; अत: आश्रय योग्य नहीं होने से उसे हेय कहा जाता है। क्षणिकपर्याय को द्रव्य की अपेक्षा हेय कहा; परन्तु राग की अपेक्षा से क्षायिकभाव को आदरणीय कहा गया है।

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की वेबसाईट प्रारंभ

संचार क्रांति के युग में सूचनाओं को तेज गति से सब तक पहुंचाने के लिये इन्टरनेट सबसे अच्छा साधन है। टोडरमल स्मारक ने भी इस आवश्यकता को महसूस करते हुये अपनी वेबसाइट नये/सुन्दर तरीके से बनाने का निर्णय किया है। यह वेबसाइट 15 अगस्त के लगभग प्रारंभ हो जायेगी।

टोडरमल स्मारक की वेबसाइट को देखने के लिये लॉग इन करें - www.ptst.in

समाचार दर्शन -

३३वां आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 1 से 10 अगस्त, 10 तक आयोजित 33वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के प्रथम दिन उद्घाटन श्री सुखदयालजी देवड़िया केसली के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली (अध्यक्ष-अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र) ने की।

सभा को संबोधित करते हुये विद्वत् शिरोमणी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने गुरुदेवश्री की महिमा करते हुये श्री टोडरमल महाविद्यालय के प्रारंभ होने की कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि तत्त्वप्रचार पहले की अपेक्षा बहुत बढा है, आज हमें इसके उज्ज्वल पक्ष को देखने की आवश्यकता है। पहले सोनगढ से बहुत कम विद्वान प्रवचनार्थ बाहर जाते थे, परन्तु आज सैकड़ों विद्वान जाते हैं। बात क्वांटिटी की ही नहीं है, आप यदि हमारे विद्यार्थियों को सुनेंगे तो उनमें भी आपको वही क्वालिटी मिलेगी। हम सभी भगवान महावीर एवं स्वामीजी के अनुयायी हैं; अत: आपस में विरोध नहीं करें, मिल-जुलकर तत्त्वप्रचार करें, एक-दूसरे का सहयोग करें।

ट्रस्ट का परिचय श्री बसन्तभाई दोशी ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों एवं विद्वज्जनों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अमृतभाई मेहता एवं श्री सुमनभाई दोशी ने तिलक लगाकर, माल्यार्पण से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार की गाथा-९२ से ९७ पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के प्रात: समयसार एवं रात्रि में पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति पर प्रवचनों के साथ-साथ पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि विद्वानों के प्रवचन हुये।

प्रतिदिन चलनेवाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री द्वारा छहढाला, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, पण्डित संजीवजी गोधा द्वारा नयचक्र, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा द्वारा गोम्मटसार की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी युगल के सी.डी. प्रवचन एवं महाविद्यालय के छात्र विद्वान प्रवचन के उपरान्त विशिष्ट व्याख्यानों में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: ५.३० बजे प्रौढ कक्षा में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित कमलचन्दजी पिडावा, पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित रूपचंदजी बण्डा, पण्डित अशोकजी

सिरसागंज, पण्डित मधुकरजी जलगांव एवं पण्डित सुनीलजी धवल के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व कु.परिणति पाटील ने बाल कक्षा ली।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री चन्द्रेशभाई वेलजीभाई जयपुर, श्री ज्ञानचंदजी व सुरेशचंदजी कोटा, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री नवीनचंदजी केशवलालजी मेहता मुम्बई थे।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में २९ विद्वानों के माध्यम से लगभग १७५० साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। लगभग ५१,४४५ घंटों के प्रवचन तथा २,२५,००० रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी कार्यकर्त्ता विद्यार्थी विद्वानों का सम्मान किया। सभा का संचालन एवं आभार प्रदर्शन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

सभी कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, श्री महापालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

अवश्य लाभ लेवें

1. श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों को एकजुट रखने, विचारों के आदान प्रदान करने, स्नातक विद्यार्थियों से संबंधित सूचनाओं को आपस में बांटने एवं स्मारक संबंधी सभी जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु एक वेबसाईट तैयार की गई है। इसे देखकर अपने विचार अवश्य व्यक्त करें। टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान एवं स्नातक विद्यार्थियों से अनुरोध है कि P.T.S.T. Sanchar का सदस्य अवश्य बनें।

www.ptstsanchar.blogspot.com

2. टोडरमल स्मारक में दोनों समय होने वाले प्रवचनों का लाइव प्रसारण इंटरनेट पर किया जा रहा है, जिसकी वेबसाईट निम्न है -

www.ustream.tv/channel/ptst/v3

इस वेबसाईट पर जो प्रवचन हो चुके हैं, उनको आप ऑनलाईन (online) देख सकते हैं और डाउनलोड (Download) भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें - Sudeep 2001@gmail.com

3. तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सभी वीडियो प्रवचनों को इंटरनेट पर Upload किया जा रहा है, जो निम्न वेबसाईट पर देख सकते हैं एवं डाउनलोड (Download) भी कर सकते हैं।

www.ustream.tv/channel/dr - hukamchand - bharill/v3

- सुदीप जैन

आध्यात्मिक शिविर संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ भटार रोड़ स्थित आशीर्वाद पैलेस में दिनाँक 30 जुलाई से 4 अगस्त तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित जयकुमारजी कोटा द्वारा दोनों समय पांच भावों पर तथा पण्डित अनुरागजी शास्त्री इन्दौर द्वारा दोनों समय द्रव्य-गुण-पर्याय एवं पंचलब्धि विषय पर एवं दोपहर में छहढाला पर कक्षा ली गई। **ह्न वीरेश जैन**

श्री सम्मेदशिखर वन्दना रथ प्रवर्तन समारोह

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक ९ अगस्त को प्रात: सम्मेदशिखर वन्दना रथ प्रवर्तन समारोह रखा गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एन.के.सेठी (अध्यक्ष-दि.जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी) एवं उद्घाटन श्री विवेकजी काला जयपुर (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष- अ.भा.दि.जैन महासमिति) ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कुलदीपजी रांका (जयपुर जिला कलेक्टर) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-अ.भा.दि.जैन महासमिति) मंचासीन थे।

विद्वानों में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि विद्वान एवं तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टियों में ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, पण्डित अमृतभाई मेहता फतेहपुर, श्री आलोकजी जैन कानपुर, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा मंचासीन थे।

उद्घाटन के पश्चात् बहुत हर्षोल्लासपूर्वक जुलूस निकाला गया, जिसमें सभी शिविरार्थी सम्मिलित हुये। जुलूस में रथ के आगे महिलायें सिर पर मंगल कलश धारणकर मंगल गीत गाते हुये चल रही थीं। साथ ही महाविद्यालय के विद्यार्थी भी भजन आदि गाते हुये चल रहे थे। जुलूस स्मारक भवन से प्रारंभ होकर पार्श्वनाथ चैत्यालय होते हुये पुन: टोडरमल स्मारक भवन पहुँचा।

सलाहकार समिति का अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक ८ अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन पण्डित धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकमारजी चौधरी भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रतनलालजी वन्दना प्रकाशन अलवर, श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री गुलाबचंदजी सागर (सुभाष ट्रांसपोर्ट), श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर, श्री राजूभाई वाडीलाल शाह अहमदाबाद, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री देवेन्द्रकुमारजी बड़कुल भोपाल, श्री बसन्तभाई इन्जीनियर अहमदाबाद, श्री लाला अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर, श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर, श्री सुभाषचन्दजी नांगलोई, श्री मगनलाल मामा आरोन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के उद्बोधन के अतिरिक्त ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर, डॉ.उत्तमचंदजी सिवनी, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा आदि महानुभावों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

अधिवेशन के उद्घाटनकर्त्ता श्री अजयकुमारजी लालचंदजी जैन ग्वालियर थे। मंगलाचरण कु.परिणति पाटील ने एवं संचालन श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

सिद्धचक्र विधान एवं शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ देवनगर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 17 से 26 जुलाई तक श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन देवनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक युवा शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा दोनों समय आध्यात्मिक कक्षा का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित ऋषभकुमारजी घिरोर, पण्डित रविकुमारजी ललितपुर एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचनों एवं कक्षाओं का भी लाभ मिला।

शिविर में लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। विधान के अन्त में दिनाँक 26 जुलाई को वीर शासन जयन्ती के अवसर पर जिनेन्द्र भगवान की शोभा यात्रा निकाली गई।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित अनिलजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुआ।

उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री परतापुर (बांसवाड़ा) की सुपुत्री **सुश्री नेहा जैन** ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज.अजमेर की वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा-2010 में **संभागीय स्तर** की वरीयता सूची में 82.77 प्रतिशत अंक अर्जित कर **प्रथम स्थान** प्राप्त किया है।

एतदर्थ आपको 'स्वतंत्रता दिवस सम्मान समारोह' के अवसर पर जिला कलेक्टर बांसवाड़ा द्वारा सम्मानित किया गया।

वीतराग-विज्ञान परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

वीर शासन जयन्ती मनाई

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार चाकसू के चौक में स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 26 जुलाई को राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में वीर शासन जयन्ती पर्व मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित बुद्धिप्रकाशजी भास्कर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रासंगिक मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

कार्यक्रम का संचालन राज. जैन सभा के मंत्री श्री कमलबाबू जैन ने किया। कार्यक्रम में श्री महेन्द्रजी पाटनी सहित जयपुर जैन समाज के अनेक विशिष्ट महानुभाव उपस्थित थे। **– सुरेश बज**

कल्पद्रुम मण्डल विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दि.जैन मंदिर मुशरफान जौहरी बाजार में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर दिनाँक 18 से 25 जुलाई तक मुशरफ परिवार की ओर से कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में पण्डित एकत्वजी शास्त्री एवं पण्डित दीपकजी शास्त्री ने संपन्न कराये। कार्यक्रम में श्री कमलचंदजी मुशरफ, श्री विजयकुमारजी सौगाणी एवं श्री अमितजी जैन का विशेष सहयोग मिला।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 12 सितम्बर 2010 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 24 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 18 अगस्त 2010 तक हमारे पास 417 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 18 अगस्त 2010 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 392 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वानों में – 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.बड़ौदरा :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (महावीर नगर)** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर **4.वस्त्रापुर-अहमदाबाद :** डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी **5.सिलवानी (तारणतरण चैत्यालय) :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **6. सोनागिरजी :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.आदर्शनगर जयपुर :** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाँधाना **8.हिंगोली :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन **9.अकोला :** ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना **10.दादर मुम्बई :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **11.मुम्बई-भूलेश्वर :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली **12.सेलू :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **13.गोरमी :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **14.कारंजा :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **15.अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **16.विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **17.मुम्बई -भायंदर:** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा **18.हिम्मतनगर :** पण्डित शैलेशभाई तलोद **19.छिंदवाड़ा :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर **20.मुम्बई-सीमंधर जिनालय :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर **21.दिल्ली-विभिन्न स्थानों पर :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन **22.इन्दौर रामाशा मन्दिर :** पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल।

विदेश में – 1.लंदन : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, **2.शिकागो :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **3.न्यूजर्सी (अमेरिका) :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1.अशोकनगर : पण्डित मीठालाल मगनलालजी दोशी हिम्मतनगर **2.अम्बाह :** पण्डित महेशकुमारजी भण्डारी भोपाल **3.भोपाल (कस्तूरबा नगर) :** डॉ. महेशकुमारजी शास्त्री भोपाल **4.भोपाल (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर **5.भिण्ड देवनगर :** पण्डित रूपचन्दजी जैन बण्डा **6.बीड :** पण्डित माधवजी शास्त्री शाहगढ़ **7.गुना :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागर **8.ग्वालियर (थाटीपुर) :** पण्डित अरुणकुमारजी ठगन टीकमगढ़ **9.गंजबासोदा :** पण्डित धर्मेन्द्रजी जैन अमरवाडा **10.हरदा :** विदुषी कुसुमलता जैन **11.इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर **12.इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर **13.इन्दौर (पलासिया) :** ब्र. सुनील शास्त्री शिवपुरी **14.इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित सतीशजी कासलीवाल उज्जैन **15.जबलपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ **16.करेली :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद **17.केसली :** पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना **18.मौ :**

पण्डित सुरेशचन्दजी जैन टीकमगढ़ **19.सागर गोरमूर्ति :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा **20.शुजालपुर मण्डी :** ब्र. सुधाबेन छिन्दवाड़ा **21.शिवपुरी छतरी रोड़ शान्तिनाथ जिनालय :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी शिवपुरी **22.सिंगोली :** पण्डित राजेश शास्त्री सिंगोली **23.घोड़ा डूँगरी :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री घोडाडूंगरी **24.मन्दसौर (कालाखेत) :** डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर **25.बीना :** पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर **26.बण्डा बेलइ :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा **27.वनखेड़ी :** पण्डित शेषकुमारजी जैन, उभेगाँव **28.बेगमगंज :** पण्डित मथुरालालजी जैन इन्दौर **29.इन्दौर (शक्कर बाजार) :** डॉ. मानमलजी जैन कोटा **30.इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड **31.जावरा :** ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन **32.जबेरा :** पण्डित निशान्तजी शास्त्री बारासिवनी **33.खुरई :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन **34.कुचडौद :** पण्डित पद्मचन्दजी गंगवाल इन्दौर **35.टीकमगढ़ :** पण्डित सुबोधचन्दजी सिंघई सिवनी **36. 37. 38.निसईजी :** पण्डित रतनलालजी जैन होशंगाबाद, विदुषी पुष्पा जैन होशंगाबाद, पण्डित गौरवजी शास्त्री बाँसवाड़ा **39.रतलाम :** पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा **40.सनावद :** पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा **41.सूखा निसईजी (दमोह) :** पण्डित कपूरचन्दजी भायजी सागर **42.सागर मकरोनिया :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर **43.सोनागिर :** डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा **44.शिवपुरी :** पण्डित संजयकुमारजी सेठी जयपुर **45.खनियाधाना :** पण्डित रमेशचन्दजी बाँझल इन्दौर **46.ग्वालियर (सोडा का कुआ) :** पण्डित रविकुमारजी जैन ललितपुर **47.सोनागिर :** पण्डित लालजी रामजी विदिशा **48.अकाझिरी :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन सागर **49.भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर **50.आरोन :** पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि **51.पथरिया :** पण्डित सरदारमलजी जैन बेरसिया **52.शाहपुर :** पण्डित मनोकुमारजी शास्त्री अभाना **53.रहली :** पण्डित संतोषकुमारजी वैध खनियाँधाना **54.शहडौल :** पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित दीपांशुजी शास्त्री कोटा **55.सागर तारणतरण :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा **56.सिलवानी (तारणतरण चैत्यालय):** पण्डित दर्शितजी शास्त्री बांदा **57.ग्वालियर मुरार :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री **58.गढ़ाकोटा :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री साव खनियाँधाना **60.कोलारस :** पण्डित मिश्रीलालजी जैन केकड़ी **61.ग्वालियर मुरार :** पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी **62.भिण्ड परमागम मन्दिर :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन सिंगोडी **63.बदरवास :** पण्डित बाबूलालजी वैध खुरई **64.गौरझामर :** पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर **65.जबलपुर-रांझी :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा रतलाम **66.खैरागढ़ :** पण्डित पन्नालालजी जैन **67.रतलाम स्टेशन :** पण्डित सुरेशचन्दजी इंजि. भोपाल **68.शाहगढ़ :** पण्डित धनेन्द्रकुमारजी सिंघल ग्वालियर **69.उज्जैन :** ब्र. नन्हे भैय्या सागर **70.ग्वालियर (चेतकपुरी) :** पण्डित विकासजी शास्त्री खनियाँधाना **71.बेरसिया :** पण्डित जीवनजी शास्त्री घुवारा **72.भोपाल (नेहरु नगर) :** पण्डित सतीशचंदजी पिपरई **73.मंदसौर (गोल चौराहा) :** पण्डित प्रमोदकुमारजी मकरोनिया सागर **74.द्रोणगिरि :** पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री मंगल सोनगढ **75.नरवर :** पण्डित अभयकुमारजी बदरवास **76.अमायन :** पण्डित राहुलजी शास्त्री नौगांव **77.अमलाई :** पण्डित अनेकांतजी शास्त्री दलपतपुर **78.बण्डा :** पण्डित अर्पणजी शास्त्री देहगांव **79.बड़नगर :** पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री सागर **80.धामनोद :** पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी **81.चन्देरी :** पण्डित निर्मलकुमारजी एडवोकेट एटा **82.ग्वालियर लश्कर :** पण्डित रमेशचंदजी करहल **83.खरगौन :** पण्डित राहुलजी शास्त्री बदरवास **84.करेरा :** पण्डित

अनिलजी शास्त्री खनियांधाना **85.रन्नौद :** पण्डित किशनमलजी कोलारस **86.सिवनी :** पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर **87.पचमढी :** पण्डित अशोकजी उज्जैन **88.89.सिरोंज :** ब्र. सरलाबेन एवं ब्र. किरणबेन सिलवानी **90. शुजालपुर (सिटि) :** पण्डित अनुपमजी शास्त्री भिण्ड **91. शहपुरा भिटोनी :** पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना **92. विदिशा (किला अन्दर) :** विदुषी परिणति पाटील जयपुर **93. फुटेरा :** पण्डित संयमजी शास्त्री सिलवानी **94.चांद :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी **95.गुना (विजयपुर) :** पण्डित रजतकांतजी शास्त्री खनियांधाना **96.बैतूल :** पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली **97.सुसनेर :** पण्डित नेमीचंदजी पिड़ावा **98.चन्देरी (आदीश्वरम्):** पण्डित अखिलजी बंसल जयपुर **99.राधौगढ :** पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री काटोल **100. खड़ैरी (तारणतरण चैत्यालय) :** पण्डित मनोजजी शास्त्री खड़ैरी **101. खड़ैरी (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित नरोत्तमदासजी शास्त्री खड़ैरी **102. 103.ग्वालियर फालके बाजार-सीमंधर जिनालय :** पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, विदुषी डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई **104. अमरकोट :** पण्डित नवीनजी शास्त्री उज्जैन **105.इन्दौर (नरसिंहपुरा) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी **106.इन्दौर (गौराकुण्ड) :** पण्डित वीरेन्द्रजी बारा **107.इन्दौर :** पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर **108. बड़ागांव :** पण्डित पलाशजी शास्त्री डडूका **109.राधौगढ :** पण्डित भावेशजी शास्त्री उदयपुर **110.कोलारस (होटल फूलराज) :** पण्डित रजितजी शास्त्री भिण्ड **111.गौरमी :** पण्डित संजयजी शास्त्री ध्रुवधाम ।

राजस्थान प्रान्त

1.जयपुर (बड़ा मंदिर) : डॉ.श्रेयांसकुमारजी शास्त्री **2.जयपुर (स्मारक भवन) :** पण्डित रमेशचंदजी लवाण **3.जयपुर :** डॉ. भागचंदजी जैन बड़ागांव **4.जयपुर :** डॉ. नीतेशजी शाह डडूका **5.जयपुर :** पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी **6.जयपुर :** पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ **7.जयपुर :** पण्डित परेशजी शास्त्री अरथुना **8.जयपुर :** पण्डित नवीनजी शास्त्री फिरोजाबाद **9.जयपुर :** पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा **10.जयपुर :** पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी **11.जयपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी बड़ामलहरा **12.जयपुर :** पण्डित सुधीरजी शास्त्री अमरमऊ **13.जयपुर :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री शाहगढ **14.जयपुर (चौमू का बाग) :** पण्डित रमेशचंदजी लवाण **15.जयपुर :** पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद **16.जयपुर :** पण्डित ज्ञानचंदजी शास्त्री कुडीला **17.जयपुर :** पण्डित चन्द्रप्रभातजी शास्त्री बड़ामलहरा **18.जयपुर :** पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर **19.जयपुर :** पण्डित अनिलजी शास्त्री सोजना **20.जयपुर :** पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना **21.जयपुर :** पण्डित अरहन्तवीरजी शास्त्री फिरोजाबाद **22.जयपुर :** पण्डित विजयजी मोदी शास्त्री **23.जयपुर :** पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ **24.जयपुर :** पण्डित अभिजीतजी पाटील कोल्हापुर **25.जयपुर :** पण्डित प्रमेशजी शास्त्री जबेरा **26.जयपुर :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर **27.बूँदी (मल्लाशाह मंदिर) :** पण्डित मोहनलालजी राठौर केशवरायपाटन **28.डूंगरपुर (पत्रकार कॉलोनी) :** पण्डित लक्ष्मीचन्दजी जैन डूंगरपुर **29.डूंगरपुर (शिवाजी नगर) :** पण्डित अमितजी शास्त्री बाँसवाड़ा **30.कोटा (रामपुरा) :** पण्डित विक्रान्तजी शाह सोलापुर **31.कुशलगढ़ :** पण्डित श्रीपालजी कीकावत घाटोल **32.रावतभाटा :** पण्डित संजयजी शास्त्री हरसौरा **33.उदयपुर (मंडल) :** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर **34.उदयपुर (से.-3) :** पण्डित अशोककुमारजी सिरसागंज **35.उदयपुर (से.- 11) :** पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री मौ. **36.उदयपुर - गायरियावास :** पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा **37.जयपुर (रेल्वे स्टेशन) :** डॉ. विमलकुमारजी शास्त्री जयपुर **38. 39.बिजौलिया**

: ब्र. पुष्पाबेन झांझरी उज्जैन एवं ब्र. ज्ञानधारा झांझरी उज्जैन **40.उदयपुर – केशवनगर :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी **41.बाँसवाड़ा (ध्रुवधाम) :** पण्डित विमोशकुमारजी शास्त्री खडैरी **42.शहाबाद :** पण्डित भगवतीप्रसादजी शास्त्री **43.कोटा (इन्द्रविहार) :** पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद **44.भीलवाड़ा :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा **45.बीकानेर :** पण्डित कैलाशचन्दजी शास्त्री मोमासर **46.उदयपुर (से.5) :** डॉ. महावीरजी जैन टोकर **47.पिड़ावा :** पण्डित भोगीलालजी जैन उदयपुर **48.उदयपुर (मण्डी की नाल) :** पण्डित कान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर **49.चित्तौड़गढ़ :** पण्डित पदमकुमारजी कटारिया केकड़ी **50.जालना :** पण्डित विमलकुमारजी जैन लाखेरी **51.बांसवाड़ा :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री द्रोणगिरि **52.भिण्डर :** पण्डित अजितकुमारजी फिरोजाबाद **53.अलवर (चैतन्य एन्क्लेव) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल **54.अलवर :** डॉ.अरुणजी शास्त्री राजुरा **55.अलवर :** पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फुटेरा **56.अलवर :** पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री ललितपुर **57.भरतपुर :** पण्डित अरुणकुमारजी अलवर **58.बोहेड़ा :** पण्डित अपूर्वजी शास्त्री भिण्ड **59.बेगू :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री सेमारी **60.61.बारां :** पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री गुना एवं विदुषी अनुभूति जैन **62. जोधपुर :** पण्डित रामनरेशजी शास्त्री लाडनूं **63.64.किशनगढ :** विदुषी मुक्ति जैन मुम्बई एवं विदुषी नयना जैन खनियांधाना **65.लांबाखोह :** पण्डित चेतनजी शास्त्री गोरमी **66.लकड़वास :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सागर **67.68.पीसांगन :** पण्डित आराध्यजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित रितेशजी शास्त्री कोटा **69.वल्लभनगर :** पण्डित अनुजजी शास्त्री खनियांधाना **70.वैर :** पण्डित अमितेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना **71.कानोड़ :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड **72.केलवाड़ा :** पण्डित अशोकजी शास्त्री बकस्वाहा **73.देवरी :** पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री लुकवासा **74.सुजानगढ :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री दरगुवां **75.76. 77.दौसा :** पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री कोलारस, पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री टीकमगढ एवं पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री भोगांव **78.अजमेर :** पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ **79.अजमेर :** पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर **80.जयपुर :** पण्डित राहुलजी शास्त्री दमोह **81.डबोक :** पण्डित शैलेशजी ध्रुवधाम **82.कूण :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री ध्रुवधाम **83.कुशलगढ :** पण्डित अपूर्वजी शास्त्री इटावा ध्रुवधाम **84.लूणदा :** पण्डित दीपकजी शास्त्री ध्रुवधाम **85.अलीगढ :** पण्डित अंकितजी खड़ैरी ध्रुवधाम ।

महाराष्ट्र प्रान्त

1.जलगाँव : पण्डित शीतलजी पाण्डे, उज्जैन **2.मुम्बई – घाटकोपर :** पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर **3.मुम्बई – मलाड ईस्ट :** पण्डित संजय शास्त्री जेवर **4.मुम्बई – मलाड वेस्ट (एवरशाइन नगर) :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन **5.मुम्बई – बोरीवली :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरा वाले, मुम्बई **6.मुम्बई – दहिसर :** पण्डित ज्ञायक शास्त्री मुम्बई **7.वाशिम जवाहर कालोनी :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर **8.मलकापुर :** ब्र. सत्येन्द्रकुमारजी मौ **9.एलोरा :** पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर **10.जयसिंगपुर :** पण्डित विजयसेनजी पाटिल आलते **11.गजपंथा :** पण्डित राजूभाई जैन कानपुर **12.मुम्बई – बसई :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा **13.नातेपुते :** पण्डित शीतल रायचन्दजी दोशी **14.सोलापुर (आदिनाथ मन्दिर) :** पण्डित अनिलकुमारजी इंजि. भोपाल **15.शिरडशहापुर :** पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री राजुरा **16.पुणे (स्वाध्याय मंडल) :** पण्डित अरहन्तप्रकाशजी झांझरी

उज्जैन **17.औरंगाबाद :** पण्डित अभिषेकजी जैन छिन्दवाड़ा **18.पुणे (ओन्ध) :** पण्डित विजयकुमारजी राउत रिठद **19.पुणे (जैन बोर्डिंग) :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री जबलपुर **20.अक्कलकोट :** पण्डित चन्दनमलजी शहा नातेपुते **21.चिखली :** पण्डित जीवराजजी जैन नासिक **22.देवलगाँवराजा :** पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना **23.अकलूज :** पण्डित श्रेयांसकुमारजी जैन जबलपुर **24.मुम्बई भूलेश्वर :** पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा **25.वाशिम (सेतवाल मंदिर) :** पण्डित शीतलजी शास्त्री कोल्हापुर **26.कारंजा (वीरवाड़ी) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालाना **27.बेलोरा :** पण्डित करणजी शास्त्री दिगम्बरे ध्रुवधाम **28.डासाला :** पण्डित अनेकांतजी शास्त्री ध्रुवधाम **29.फालेगांव :** पण्डित दिलीपजी महाजन मालेगांव **30. हिवरखेड़ :** पण्डित ऋषिकेशजी शास्त्री घोड़के औरंगाबाद **31.लासूर्णे :** पण्डित विपुलजी शास्त्री बोरालकर हिंगोली **32.सदाशिवनगर :** पण्डित चेतनजी शास्त्री चौगुले ध्रुवधाम **33. देवलाली :** पण्डित समकितजी शास्त्री कोटा **34.रामटेक :** पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी **35. मालशिरस :** पण्डित अभिजीतजी शास्त्री पाटील कोल्हापुर **36.शिरपुर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री गाड़ेकर जयपुर **37.वाशिम (सेतवाल मंदिर) :** पण्डित शीतलजी शास्त्री कोल्हापुर **38.वरूड :** पण्डित संदेशजी शास्त्री बोरालकर हिंगोली **39.यवतमाल :** पण्डित पंकजजी शास्त्री हिंगोली **40.पुसद :** पण्डित देवकुमारजी कान्हेड़ एलोरा **41.रिसोड :** पण्डित जयेशजी शास्त्री मालेगांव **42.विहीगांव :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री धोतरे ध्रुवधाम **43. 44.सेलू :** पण्डित अशोकजी शास्त्री एवं पण्डित अनंतजी शास्त्री शिरपुर **45. 46.नागपुर :** पण्डित अशोककमारजी शास्त्री रायपुर एवं पण्डित मनीषजी सिद्धांत खड़ैरी **47.हिंगोली :** पण्डित अमोलजी सिंघई शास्त्री **48.नागपुर :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड **49.देवलाली :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर **50. चौपड़ा :** पण्डित सूरजजी शास्त्री मगदुम (कोल्हापुर) **51.कोल्हापुर :** पण्डित जिनचंद्रजी हेरले **52.पुणे (पिंपरी) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री केलवाड़ा।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1.बड़ौत : पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर **2.खतौली :** पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली **3.भौगाँव :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम **4.कुरावली :** पण्डित हुकमचन्दजी जैन राघौगढ़ **5.कायमगंज :** पण्डित विमलचन्दजी जैन जलेसर **6.मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित कमलचंदजी जैन पिडावा एवं पण्डित अनुभवजी शास्त्री कोटा **7.जेतपुर कलां :** पण्डित गोकुलचन्दजी सरोज ललितपुर **8.रूडकी :** पण्डित लालारामजी साहू अशोकनगर **9.शिकोहाबाद :** पण्डित मोहित शास्त्री नौगांव **10.एत्मादपुर :** पण्डित पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली **11.अमरोहा :** पण्डित दीपकजी शास्त्री मड़देवरा **12.गुरसराय :** पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा **13.कानपुर (किदवई नगर) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री मड़ावरा **14.भौगाँव :** पण्डित जितेन्द्रजी दोशी मुम्बई **15.बांदा :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री दहेगांव **16 लखनऊ :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस **17.मंगलायतन (अलीगढ) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री इंजि.इंदौर **18.धामपुर :** पण्डित अंकितजी शास्त्री खनियांधाना **19.गंगेरू :** पण्डित नकुलजी शास्त्री मुरैना **20.इटावा :** पण्डित धर्मचंदजी जयथल **21.कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित निशांतजी शास्त्री ध्रुवधाम **22.करहल :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ **23.मेरठ (शास्त्री नगर) :** पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा **24.बानपुर :** पण्डित विकासजी शास्त्री इंदौर **25.सहारनपुर :** पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री महाजन जयपुर **26.झांसी :** पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना **27.28.सिरसागंज :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक एवं पण्डित समकित बांझल कोटा

29.जसवंतनगर : पण्डित समकितजी शास्त्री गुना **30. 31.खतौली (कानूनगोयान) :** पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा एवं पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री जयपुर **32. 33.खेकड़ा :** पण्डित कस्तूरचन्दजी बजाज भोपाल एवं पण्डित करणजी शाह बड़ौदरा **34.मैनपुरी :** पण्डित सचिनजी अकलूजवाले खनियांधाना **35.मड़ावरा :** ब्र.प्रवीणजी दिल्ली **36.कुरावली :** पण्डित नेमीचंदजी ध्रुवधाम **37.कुर्राचितपुर :** पण्डित धवलसेनजी शास्त्री ध्रुवधाम **38.ललितपुर (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर ।

गुजरात प्रान्त

1.अहमदाबाद - मणिनगर : पण्डित नीलेशभाई जैन मुम्बई **2.अहमदाबाद बहेरामपुरा :** डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई **3.अहमदाबाद मेधाणीनगर :** ब्र. ब्रजलालजी जैन टोकर **4.दाहौद :** पुष्पाबेन खण्डवा **5.राजकोट :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया **6.अहमदाबाद आशीषनगर :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर **7.तलौद :** पण्डित विनोदकुमारजी जैन जबेरा **8.मौरवी :** पण्डित मधुकरजी जैन जलगाँव **9.अहमदाबाद - पार्श्वनाथ चैत्यालय :** पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी **10.वापी :** पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवां **11.सूरत :** पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल **12.अहमदाबाद - पालडी :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा **13.रखियाल :** पण्डित दीपकजी कोटडिया अहमदाबाद **14.अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित संदीपजी शास्त्री शहपुरा **15.ओढव :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी पंकज सिंगोली **16.बड़ोदरा :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर **17.राजकोट :** पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट **18.बडोदरा :** पण्डित सुदीपजी शास्त्री अमरमऊ **19.चैतन्यधाम-अहमदाबाद :** ब्र.कैलाशचन्द्रजी अचल **20. नरोड़ा-अहमदाबाद :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री गनोडा (बांसवाड़ा)।

दिल्ली

विभिन्न उपनगरों में तत्त्वप्रचारार्थ निश्चित किये गये 51 विद्वान-

1. आत्मार्थी ट्रस्ट : पण्डित संजयकुमारजी इंजि. खनियाँधाना **2. विश्वासनगर :** ब्र. कल्पना दीदी सागर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री **3.ग्रीनपार्क :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी **4.मयूर विहार :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली **5.सी-2 जनकपुरी :** पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली **6.बी-1 जनकपुरी :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़ 7. पण्डित जयप्रकाशजी शास्त्री गांधी दिल्ली 8. पण्डित संजीवजी शास्त्री बारां **9.बैंक एन्क्लेव लक्ष्मी नगर :** पण्डित प्रयंकजी शास्त्री दिल्ली **10.वसुंधरा एन्क्लेव :** पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर **11.विकासपुरी :** पण्डित अश्विनजी नानावटी बाँसवाड़ा **12.अशोका एन्क्लेव, पीरागढी :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी बाँसवाड़ा **13.बुद्धविहार :** पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुज्जफरनगर **14.पटपडगंज गांव :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर 15. पण्डित मयंकजी शास्त्री गढ़ी बाँसवाड़ा 16. पण्डित निपुणजी शास्त्री सरदारशहर 17. पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री (ध्रुवधाम) बाँसवाड़ा **18.वैदवाड़ा :** पण्डित पंकजजी शास्त्री बण्डा 19. पण्डित शैलेन्द्रजी शास्त्री जयपुर 20. पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई 21. पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल **22.शंकर रोड़, राजेन्द्रनगर :** पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर 23. पण्डित तन्मयजी शास्त्री खनियाँधाना **24.आत्मसाधना केन्द्र :** ब्र.विमला बहनजी देवलाली 25. पण्डित अभिषेकजी शास्त्री ध्रुवधाम आंजना 26. पण्डित सुरेन्द्रजी

शास्त्री (शाहगढ़) दिल्ली 27. पण्डित रॉकीजी गांधी शास्त्री डडूका **28. शिवाजी पार्क :** पण्डित महेशचन्दजी जैन ग्वालियर **29.सैनिक फार्म :** विदुषी श्रुति जैन शास्त्री दिल्ली **30.सीताराम बाजार :** पण्डित अमोलजी शास्त्री ध्रुवधाम **31.पालम गांव :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री ध्रुवधाम **32.लारेंस रोड़ :** पण्डित मयंकजी शास्त्री ध्रुवधाम 33.पण्डित रोहितजी शास्त्री ध्रुवधाम 34.पण्डित चैतन्यजी शास्त्री ध्रुवधाम **35.पाण्डव नगर :** पण्डित जयदीपजी शास्त्री (डडूका) 36.पण्डित बसन्तजी शास्त्री तमिलनाडु 37.पण्डित कपिलजी शास्त्री पिडावा 38.पण्डित अर्पितजी शास्त्री बड़ामलहरा 39.पण्डित रितेशजी शास्त्री डडूका **40.बदरपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री ध्रुवधाम **41.पहाड़गंज :** पण्डित सुमितजी शास्त्री ध्रुवधाम **42.सरस्वती विहार :** पण्डित प्रीतमजी शास्त्री ध्रुवधाम 43.पण्डित मेघवीरजी शास्त्री ध्रुवधाम 44.पण्डित रॉकीजी शास्त्री ध्रुवधाम 45.पण्डित नीरजजी शास्त्री ध्रुवधाम 46.पण्डित सुदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम 47.पण्डित सौरभजी शास्त्री ध्रुवधाम **48.शक्तिनगर :** पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुरा **49.इन्द्रपुरी :** पण्डित अश्विनजी नानावटी बाँसवाड़ा **50.51. बसंतकुंज :** डॉ.सुदीपजी शास्त्री एवं पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई।

अन्य प्रान्त

1.बैंगलोर : पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर **2.एरनाकुलम :** पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर **3.4.बेलगांव (कर्नाटक) :** पण्डित अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी एवं पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री जयपुर **5.बेलगांव (मालमारूति) :** पण्डित अजितजी शास्त्री जयपुर **6.घटप्रभा :** पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर **7.यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित विनोदजी शास्त्री चैन्नई **8.कोलकाता :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना **9. 10. देहरादून (विकासनगर) :** पण्डित अंचलजी शास्त्री ललितपुर एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री छिंदवाड़ा **11. यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित राहुलजी शास्त्री बांसवाड़ा।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 23 सितम्बर	बड़ौदा	दशलक्षण महापर्व
10 से 19 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
22 से 24 अक्टूबर	खतौली	अहिंसा सेमिनार व प्रवचन
25 अक्टूबर	मेरठ	प्रवचन
2 नवम्बर	मंगलायतन विश्वविद्यालय	दीक्षान्त समारोह
14 व 15 नवम्बर	हेरले (कोल्हापुर)	जिनमंदिर शिलान्यास
18 से 21 नवम्बर	दिल्ली	अष्टाह्निका महापर्व
17 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
25 दिस.से 1 जन.	इन्दौर (मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा